वर्ष – 2, जनवरी–मार्च 2010

"सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों की नीतियों एवं कार्यक्रमों में उपेक्षित बच्चों की भागीदारी" परियोजना के अन्तर्गत प्रकाशित

तितली

UKaid from the Department for International Development

25 years 1983 2008 CUTS International

रंग बिरंगे पंखों से...

Save the Children

संपादक की कलम से

प्रिय पाठकों,

तितली का यह अंक प्रकाशित करते हुए हमे अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। पिछले अंक के बारे में पाठकों के विचारों को ध्यान में रखते हुए इस अंक को और अधिक रोचक बनाने का प्रयास किया गया है।

चित्तौड़गढ़ पंचायत समिति की 6 ग्राम पंचायतों के 28 गाँवों में चलाई जा रही *"सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों की नीतियों एवं कार्यक्रमों में उपेक्षित बच्चों की भागीदारी परियोजना"* के तहत आयोजित गतिविधियों में बच्चों की सराहनीय भागीदारी रही है। पंचायतीराज चुनाव के दौरान बच्चों नें प्रत्याशियों के सामने अपनी मांगें रखकर एक जागरूक नागरिक होने का परिचय दिया है। संदर्भ सामग्री निर्माण कार्यशाला एवं अधिकारियों के साथ किये संवाद से बच्चों में आत्मविश्वास की भावना का संचार हुआ है, साथ ही उनमें छिपी प्रतिभाओं को निखारने का अवसर मिला है।

तितली के इस अंक में परियोजना के तहत आयोजित गतिविधियाँ एवं बाल उपयोगी जानकारी प्रकाशित की जा रही है। इस अंक के बारे में आपके बहुमूल्य सुझाव सादर आमंत्रित हैं...

आशीष त्रिपाठी
केन्द्र समन्वयक

अन्दर के पृष्ठ में

- पंचायती चुनाव में माहौल
- कालाबज़ारी एवं जमाखोरी
- ज्ञानी से जागी रोशनी...
- मीडिया क्लिप

बाल हितकारी हों ग्राम पंचायतें

सेव द चिल्ड्रन के सहयोग से चित्तौड़गढ़ पंचायत समिति की 6 ग्राम पंचायतों के 28 गाँवों में *'सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों की नीतियों एवं कार्यक्रमों में उपेक्षित बच्चों की भागीदारी परियोजना"* संचालित की जा रही है। परियोजना के माध्यम से वंचित बच्चों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ते हुए उनके अधिकारों की रक्षा के लिए प्रयास किया जा रहा है।

हाल ही में हुए पंचायतीराज चुनाव में प्रत्याशियों को बाल अधिकारों के प्रति जवाबदेह बनाने हेतु बच्चों के सहयोग से "बच्चों का मांग पत्र अभियान" का आयोजन किया गया। अभियान के अन्तर्गत आयोजित बाल पंचायत बैठकों में पंचायतीराज व्यवस्था के ढांचे एवं इससे जुड़े घटकों की भूमिका पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठकों में बच्चों का मांगपत्र तैयार करने का निर्णय लिया गया।

15 जनवरी 2010 को कट्स मानव विकास केन्द्र पर बच्चों का मांग पत्र निर्धारण बैठक आयोजित की गई। बैठक में प्रत्येक गाँव से दो बच्चों सहित 28 गाँवों के बाल प्रतिनिधियों ने भाग लिया। बच्चों ने छोटे समूह में चर्चा कर माँग पत्र तैयार करके बड़े समूह में पढ़कर सुनाया। सभी समूहों द्वारा तैयार किये गए मांग पत्र को समेकित कर एक मांग पत्र तैयार किया गया।

बच्चों ने अपने मांग पत्र को चुनाव लड़ रहे प्रत्याशियों के सामने रखा। प्रत्याशियों ने बच्चों द्वारा तैयार किये मांग पत्र की ना केवल सराहना की, बल्कि लिखित में वादा भी किया कि जनप्रतिनिधि के रूप में चुने जाने पर वे बच्चों की इन मांगों को प्राथमिकता देंगे एवं बाल अधिकार संरक्षण हेतु प्रयास करेंगे। लोकतंत्र की भावना में विश्वास जताते हुए "पंचायतीराज चुनाव 2010" में एक हज़ार से भी अधिक बच्चों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई एवं 110 उम्मीदवारों से लिखित में वादे लिये।

'डरपू स्कूल जाऊँ के न जाऊँ...'

4 दिसम्बर, 2009 को घटियावली गाँव में बालसभा का आयोजन किया गया। बाल सभा में कट्स कार्यकर्ता ने शिक्षा के महत्व पर जानकारी दी। बाल सभा में एक 12 वर्षीय बालक भी उपस्थित था, जिसने दो वर्ष पहले कक्षा तीसरी में पढ़ाई छोड़ दी। परिचय में उसने अपना नाम जगदीश चन्द्र गाडरी बताया। उसके माता पिता खेती एवं बकरी पालन करते हैं। उसका छोटा भाई कैलाश पढ़ने जाता है एवं बड़ी बहन पारिवारिक कार्य में सहयोग करती है। जब जगदीश से पढ़ाई नहीं करने के बारे में पूछा तो उसने बताया कि "सर, मेडम मने मारे अणी वाते मने डरपनी लागे, मुं इस्कूल भणवा नी जाऊँ, दो साल भणाई छोड्या ने वेग्या, अबे मने कोनी भणावें।" और अधिक पूछने पर जगदीश ने बताया कि माता पिता के कहने पर वह सुबह घर से स्कूल के लिए निकल जाता लेकिन दिन भर इधर उधर घूमकर छुट्टी के समय वापस घर आ जाता है। कुछ समय बाद जब माता पिता को असलियत का पता चला तो जगदीश को बहुत समझाया लेकिन वह स्कूल जाने को राज़ी नहीं हुआ। माता पिता ने हार मानकर उसे बकरियां चराने के काम में लगा दिया।

जगदीश को पढ़ाई का महत्व समझाया गया। कार्यकर्ता ने कहा कि अगर तुम पढ़ाई नहीं छोड़ते तो आज तुम भी पाँचवी कक्षा में होते। तुम चाहो तो कल ही तुम्हारा स्कूल में पुनः प्रवेश हो सकता है। पुनः प्रवेश लेकर अपने भाई के साथ तुम भी पढ़ने जा सकोगे। कार्यकर्ता के साथ साथ बच्चों ने भी जगदीश को पुनः पढ़ने हेतु प्रेरित किया। आखिर जगदीश पुनः पढ़ने के लिए राज़ी हो गया। दूसरे ही दिन जगदीश ने कक्षा 3 में प्रवेश ले लिया और अब रोज पढ़ने जाता है।

पंचायत चुनाव में माहौल

- ➪ पंचायतीराज चुनाव में लालच में आकर हमें अपना वोट नहीं देना चाहिए।
- ➪ पंचायतीराज चुनाव के दौरान जो हमारे समय पर काम आए उसे ही वोट देना चाहिए।
- ➪ पंचायतीराज चुनाव में जो सड़क या पानी की टंकी की व्यवस्था करता हो उसको ही वोट देना चाहिए।
- ➪ जनता को अपने पसंद के नेता को वोट देना चाहिए न कि किसी के दबाव में आकर।
- ➪ जो शराब पिलाकर वोट मांगे उसे वोट नहीं देना चाहिए।
- ➪ जनता को पैसे का लालच देकर वोट मांगे तो उसे वोट नहीं देना चाहिए।
- ➪ जरूरत पड़ने पर नेता के पास जाने पर वह अच्छा व्यवहार नहीं करता है तो उसे वोट नहीं देना चाहिए।
- ➪ वोट के समय नेता अच्छी–अच्छी बातें करते हैं परंतु वोट पाते ही जनता की जरूरतें पूरी नहीं करते हैं।
- ➪ जो नेता अच्छा हो उसे ही वोट देना चाहिए।
- ➪ जो रिश्वत व लोभ देता है उसे वोट नहीं देना चाहिए।
- ➪ नेता जीत जाने के बाद जनता को भूल जाते हैं, हमारे देश में जनता का शासन है अतः जनता को पूरा हक है कि वह सही नेता का चुनाव करे।

विनोद नायक, केलझर खेड़ा

हमारा सरपंच कैसा हो?

- ◆ सरपंच को गाँव में सड़क बनवानी चाहिए।
- ◆ सरपंच को पानी की व्यवस्था करनी चाहिए।
- ◆ सरपंच चुनाव के समय ही जनता को पूछते हैं, पर सरपंच ऐसा हो कि गाँव की जनता की हर समय मदद करे।
- ◆ वास्तविक व्यक्ति को बी.पी.एल में नाम जुड़वाने वाला व्यक्ति ही सरपंच हो।
- ◆ जो गाँव की भलाई में उचित निर्णय ले सके।
- ◆ जन्म प्रमाण पत्र बनवाने के लिए भी सरपंच को आगे आना चाहिए।
- ◆ गाँवों में नालियों की व्यवस्था होनी चाहिए।
- ◆ जनता के साथ अच्छा व्यवहार करे एवं जनता को दुखी न करे।
- ◆ गाँवों में हैण्डपम्प एवं टंकी लगवानी चाहिए।
- ◆ गाँवों में स्कूल बनवाए एवं बच्चों के लिए खेल का मैदान हो।
- ◆ स्कूल भवन व चार दीवारी बनवाने में मदद करना चाहिए।

महेन्द्र नायक, केलझर खेड़ा

हँसना मना है

एक छात्र – गुरूजी अच्छा इन्सान कौन होता है?

गुरूजी – अच्छा इंसान वही होता है जो मुसीबत के समय दूसरों के काम आता है।

एक छात्र – पर आप तो परीक्षा के समय हमारे काम नहीं आते और न ही दूसरों को आने देते हैं।

::::::::::::::::::

पिताजी – चिंटू अच्छा बताओ अण्डे में से चूज़ा कैसे निकलता है?

चिंटू – पिताजी ये तो कोई बड़ी बात नहीं है, परंतु मैं तो यह सोच रहा हूँ कि चूज़ा अंडे के अंदर गया कैसे?

पहेलियाँ

1. काली माँ के गोरे पूत, दोनों की भारी करतूत।
   भाई का भाई से त्याग, एक ठण्डा तो दूजा आग।।
2. ढाई आखर का मेरा नाम, उल्टा सीधा एक समान।
   दिन को मैं करता आराम, रात को मैं आता काम।।

शांति लाल डांगी

उत्तर –चांद–सूरज, बल्ब

कालाबजारी एवं जमाखोरी

ऐसे लोग जो जमाखोरी कर आवश्यकता की चीज़ों को छुपा देते हैं और भाव आने का इन्तजार करते हैं और जब भाव चढ़ता है तो अधिक मूल्य में बेचकर मुनाफा कमाते हैं। ऐसे लोग अपने फायदे के लिये वस्तुओं को छुपाकर गाँव के लोगों का शोषण करते हैं। ऐसे कालाबज़ारियों एवं जमाखोरों से हमें बचना चाहिये। ऐसे लोगों की पहचान होने पर हमें तुरंत पुलिस को खबर करके गरीब लोगों का शोषण होने से बचाना चाहिए। अपने गांव के वार्डपंच, सरपंच, जागरूक लोगों की मदद से हमें ऐसे मुनाफाखोरों को सज़ा दिलानी चाहिये।

कमलेश, कक्षा 5वीं, ऐराल

बच्चों ने बनायी संदर्भ सामग्री

18 व 19 फरवरी 2010 को कट्स मानव विकास केन्द्र पर बच्चों की दो दिवसीय जिला स्तरीय संदर्भ सामग्री निर्माण कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 28 गाँवों के 100 बालक बालिकाओं व 24 सचेतकों ने भाग लिया।

कार्यशाला में सर्व प्रथम बच्चों ने कागज़ की टोपियां बनाना सीखा। बच्चों ने अपने हाथ से बनाई टोपी को उत्साह से अपने सिर पर धारण किया। बच्चों ने शिक्षा की महत्ता, उचित स्वास्थ्य सुविधा, बाल अधिकार, बाल विवाह, पर्यावरण आदि विषय पर आधारित पोस्टर बनाये।

इस अवसर पर सेव द चिल्ड्रन जयपुर के राजीव नागपाल एवं सर्व शिक्षा अभियान के अतिरिक्त जिला समन्वयक प्रदीप दीक्षित ने बच्चों द्वारा निर्मित संदर्भ सामग्री का अवलोकन किया। अवलोकनकर्ताओं ने बच्चों में छिपी प्रतिभाओं को निखारने हेतु इस प्रकार के अवसर प्रदान करने की आवश्यकता प्रतिपादित की।

कार्यशाला के दूसरे दिन बच्चों व सहजकर्ताओं ने बच्चों से जुड़े विषय पर चर्चा की एवं विषयों पर आधारित संदर्भ सामग्री निर्माण किया।

ज्ञानी से जागी रोशनी...

ज्ञानी गंगाराम और मालती की इकलौती बेटी थी। उसकी हर जरूरत पूरी होती क्योंकि गंगाराम लड़की को लड़के से कम नहीं मानता था। उनके पड़ोस में ही ज्ञानी की सहेली रोशनी रहती थी। वह भी अपने माता–पिता की इकलौती संतान थी। पर उसकी माता रूक्मणी व पिता रामनारायण उसे बोझ समझते और हमेशा कोसते। रामनारायण ज्ञानी के पिता गंगाराम के साथ खदान में काम करता था। गंगाराम ने बहुत बार रामनारायण को समझाया पर रामनारायण की सोच थी की लड़की पराया धन है पढ़ लिख कर क्या करेगी, घर का काम काज करे जो आगे उसके काम आएगा।

ज्ञानी सुबह उठती नहा धोकर विद्यालय जाती और आने के बाद आराम कर थोड़ा खेलती फिर अपनी पढ़ाई में लग जाती। कभी कभी अपनी माँ के कामों में भी हाथ बंटा लेती। वहीं रोशनी सवेरे उठते ही चूल्हा चौका करती, बकरियां चराने जाती और वापस आकर पुनः घर का काम करती। वह जब बकरियां चराने जाती तो ज्ञानी के साथ थोड़ा बहुत खेल लेती जिससे उसका मन बहल जाता। ज्ञानी कई बार रोशनी को स्कूल चलने के लिए कहती पर रोशनी चाहते हुए भी नहीं जा पाती।

समय के साथ दोनों बड़ी होती गईं और दोनो की राहें बदल गईं। ज्ञानी ने पढ़ लिखकर नर्सिंग का कोर्स कर लिया और अपने ही गांव में प्राईवेट अस्पताल खोल दिया। रोशनी की उसी गांव में रहने वाले दीपक से शादी हो गई। दीपक रामनारायण के साथ खदान में कार्य करता था। दीपक कमाया हुआ पैसा शराब में गंवा देता और शराब पीकर रोशनी के साथ झगड़ा करता। रोशनी लाचार होकर कुछ नहीं कर पाती और खामोशी से सब सहन करती।

खदान में एक दिन हादसा हुआ जिसमें दीपक अपनी जान गंवा बैठा। रामनारायण और गंगाराम के पांव टूट गये। ज्ञानी और रोशनी पर घर की जिम्मेदारी आ गयी। ज्ञानी ने लड़के की तरह अपने परिवार की जिम्मेदारी उठाई। रोशनी के विधवा होने के कारण वह अपनी मां के पास वापस चली गई। रोशनी घर–घर जाकर झाड़ू बर्तन करती और अपना व अपने परिवार का पेट पालती। रोशनी के मां बाप उसे देख दुखी होते और अपनी गलती का पछतावा करते। रोशनी को देख ज्ञानी को भी अच्छा नहीं लगता कि वह लोगों के घर काम करे। ज्ञानी ने रोशनी के मां बाप से बात की और उसे पढ़ाने की जिम्मेदारी ली।

ज्ञानी रोज शाम को रोशनी को पढ़ाती और उसे प्राईवेट पांचवी की परीक्षा दिलाई। रोशनी के पांचवी पास करने के बाद उसके जीवन में एक आशा की किरण दिखाई दी। ज्ञानी से प्रेरित होकर रोशनी ने बारहवी कक्षा प्राइवेट से उतीर्ण की। विधवा होने के कारण उसका एस.टी.सी. में चयन हो गया। एस.टी.सी. कर वह पास के ही गांव में शिक्षिका बन गई। रोशनी के जीवन में एक नया मोड़ आया। उसके मां बाप ने उसकी दूसरी शादी करा दी। दो साल बाद रोशनी ने एक बेटी को जन्म दिया। रोशनी अपनी बेटी को वह सब देना चाहती है जिससे वह वंचित रह गई। ज्ञानी ने रोशनी के जीवन को रोशन कर दिया।

– वन्दना चौहान, कट्स

स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं का आमुखीकरण

24 फरवरी को कट्स मानव विकास केन्द्र पर परियोजना क्षेत्र के स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं का आमुखीकरण किया गया जिसमें 6 ग्राम पंचायत के 28 गाँवों की आशा व ए.एन.एम ने भाग लिया। संदर्भ व्यक्ति के रूप में सेवानिवृत प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. विजय कांटिया ने बाल स्वास्थ्य के बारे में जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के ब्लॉक परियोजना प्रबंधक जितेन्द्र ओझा ने बच्चों के टीकाकरण और पोषाहार के महत्व के बारे में जानकारी दी।

अधिकारियों ने किया उपेक्षित बच्चों से सीधा संवाद

09 फरवरी 2010 को कट्स मानव विकास केन्द्र पर बाल संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 28 गांवों के बच्चों के साथ आयोजित बाल संवाद कार्यक्रम में 50 बालक बालिकाओ ने भाग लिया। राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के ब्लॉक परियोजना प्रबंधक जितेन्द्र ओझा ने बाल स्वास्थ्य, जननी सुरक्षा योजना, बालिका संबल योजना, मुख्यमंत्री जीवन रक्षा कोष के बारे में जानकारी दी। उन्होने बच्चों को एम.टी.सी, फोटोथेरेपी मशीन के बारे में भी अवगत कराया। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की उपनिदेशक श्रीमती मीना शर्मा ने पालनहार एवं किशोर गृह आवासीय योजना के प्रावधानों के बारे में अवगत कराया। राष्ट्रीय बाल श्रमिक परियोजना के क्षेत्रीय समन्वयक रघुनंदन मौड़ ने राष्ट्रीय बाल श्रमिक परियोजना के तहत चित्तौड़गढ़ जिले में संचालित किये जा रहे बाल श्रम विद्यालयों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बंधुआ मज़दूरी से जुड़े कानूनों एवं बाल श्रम को रोकने हेतु सामूहिक प्रयासों पर चर्चा की।

बाल श्रम एवं बाल विवाह विरूद्ध रैली का आयोजन

कट्स मानव विकास केन्द्र द्वारा 6 ग्राम पंचायतों के 28 गांवों में बालश्रम एवं बाल विवाह के विरूद्व रैली का आयोजन किया गया। रैली का शुभारम्भ नवनिर्वाचित सरपंच द्वारा हरी झण्डी दिखाकर किया गया। रैली के दौरान बच्चों ने तख्तियों के माध्यम से *''बाल–मजदूरी छोड़ो, शिक्षा से नाता जोड़ो''*, *''बाल पंचायत रो कैणो है, बालश्रम नहीं करणों है''*, *''बालश्रम अभिशाप है, मत करिए यह पाप है''* जैसे नारे लगाए। रैली के दौरान कट्स मानव विकास केन्द्र के कार्यकर्ताओं द्वारा समुदाय से भी संवाद स्थापित किया गया व बालश्रम एवं बाल विवाह विषय पर कट्स द्वारा प्रकाशित संदर्भ सामग्री वितरित की।

झलकियां

बाल अधिकार संवाद

स्वास्थ्य कार्यकर्ता आमुखीकरण

मांग पत्र निर्धारण बैठक

जन प्रतिनिधियों से मुलाकात

बाल विवाह विरूद्ध रैली

IEC निर्माण कार्यशाला

अध्यापक आमुखीकरण कार्यशाला

समुदाय बैठक

मीडिया क्लिप

बच्चों ने बनाई संदर्भ सामग्री

बच्चों ने बनाई कागज की टोपियां

रावता सेंती में सामग्री निर्माण कार्यशाला

ऐसा हो सपनों का सरपंच

बच्चों ने बताए मांग पत्र

चित्तौड़गढ़, 15 जनवरी

अध्यापक आमुखीकरण कार्यशाला आयोजित

अधिकारियों से चर्चा करेगा कट्स

चित्तौड़गढ़, 9 फरवरी (पसं.)। कट्स इन्टरनेशनल के मानव विकास ... बच्चों की भागीदारी परियोजना के तहत संवाद का ...

उपेक्षित बच्चों से किया सीधा संवाद

चित्तौड़गढ़, 10 फरवरी। कट्स इन्टरनेशनल के मानव विकास केन्द्र ... कारी एवं गैर सरकारी संगठनों की नीतियों व ... की भागीदारी परियोजना के तहत ... के एक संवाद ...

बच्चों की समस्याएं सुनने वाला हो सरपंच

चित्तौड़गढ़, 15 जनवरी। हमारे गांव का सरपंच ऐसा हो जो बच्चों की बात सुने, बच्चों से जुड़ी योजनाएं लायें। ... मांगपत्र तैयार किया, जिसमें मुख्य रूप से बाल मजदूरी, बाल विवाह, विद्यालयों में ढांचागत व्यवस्थाओं में सुधार, पेयजल व्यवस्था, स्वास्थ्य सेवाओं एवं पर्यावरण ...

बाल अधिकारों पर अध्यापकों की कार्यशाला

चित्तौड़गढ़, 22 फरवरी (पसं.)। कट्स मानव विकास केन्द्र रावला ... के सेवानिवृत अतिरिक्त परियोजना समन्वयक सुरेश शर्मा ने ड्राप आउट बच्चों व इसके कारणों पर ...

बचपन

बच्चों को देखकर याद आता है बचपन
कितना भोला है बचपन कितना नादान है बचपन।।

कभी पतंग उड़ाना डोर थामना
कभी गुब्बारे उड़ाना कभी आइसक्रीम खाना।

वो लड़ता हुआ बचपन वो झगड़ता हुआ बचपन
शिकायतों का पुलिंदा सुनाता हुआ बचपन।।

कंचों की गोली पर साधता निशाना
कभी रेत के धोरों पर गाता तराना।

कभी बरखा में नहाना कीचड़ में भर जाना
कभी रूठ कर सो जाना याद आता है बचपन।।

कभी छिपना छिपाना कभी ब्याह रचाना
नए कपड़े पहन बार बार इतराना।

कभी सीटी बजाना कभी ताली बजाना
कभी कमर मटकाना याद आता है बचपन।।

'होहाहा' कह कर डराना कभी चिढ़ना चिढ़ाना
कभी आँखें दिखाना कभी अँगूठा दिखाना।।

कभी स्कूल जाना कभी घर भाग आना
कभी खेत चले जाना याद आता है बचपन।।

कभी पिताजी के कंधे पर बैठ मेले में जाना
कभी चश्मा लगाना कभी अलगोजे बजाना।

कभी लकड़ी की कार में फोटो खिंचवाना
कभी झूलों में बैठ आसमान छूकर आना।।

ऐसा था बचपन दीवाना था बचपन
बच्चों को देख याद आता है बचपन।।

संकलित

कोई लौटा दे मेरा बचपन

मुद्रक : एम.एस. प्रिण्टर्स

कट्स मानव विकास केन्द्र
सेंती (रावला), चित्तौड़गढ़, फोन : (01472) 241472, फैक्स : 240072
E-mail: chd@cuts.org, Website: www.cuts-international.org

SAVE THE CHILDREN, INDIA
Rajasthan State Programme Office
42, Vrindavan Vihar, Kings Road, Jaipur - 302 021
Ph: +91 141 403 5881, Fx: +91 141 322 0881 www.savethechildren.in